

Section - C**खण्ड - स**

Note: This question is compulsory. Write your answer to every part of this question in **one word** or in **one sentence**. Each part carries **2** marks.

यह प्रश्न अनिवार्य है। इस प्रश्न के प्रत्येक भाग का उत्तर **एक शब्द या एक वाक्य** में दीजिए। प्रत्येक भाग **2** अंकों का है।

11. (i) What are the two consciousnesses in which identity is established in Viṣayagata pratyaksa ?
विषयगत प्रत्यक्ष में किन दो चैतन्यों में अभेद होता है?
- (ii) Through which mental mode 'snake' is cognised in rope- snake illusion ?
रज्जु-सर्प भ्रम में 'सर्प' का ज्ञान किस वृत्ति से होता है ?
- (iii) Does Advaita Vedānta admit kevalānvayī inference ?
क्या अद्वैत वेदान्त में केवलान्वयी अनुमान स्वीकृत है ?
- (iv) Give an example of Nirvikalpakapratyakṣa according to Vedāntaparibhāṣā.
वेदान्तपरिभाषा के अनुसार निर्विकल्पकप्रत्यक्ष का एक उदाहरण दीजिये।
- (v) Write the definition of Išvarasākṣi.
ईश्वरसाक्षि की परिभाषा लिखिये।

M/Sem IV/539

**M.A. (Semester IV)
Examination, 2014-15**

Philosophy (Common with I.P.R.)**Major Elective****Paper : III****Advaita Vedānta (B)****Time : Three Hours****Full Marks : 70**

(Write your Roll No. at the top immediately on the receipt of this question paper)

Note: Attempt **all three Sections – A, B and C** according to the instruction given.
निर्देशानुसार **अ, ब तथा स** इन तीनों खण्डों का उत्तर दीजिए।

Section - A**खण्ड - अ**

Note: Answer any **two** questions each in **500** words. Each question carries **15** marks.

किन्हीं **दो** प्रश्नों का चयन कर प्रत्येक का उत्तर **500** शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न **15** अंकों का है।

1. Explain the two definitions of PRAMA in the light of Vedānta paribhāṣā and also discuss how the problem of persistent knowledge has been solved in it.

वेदान्त परिभाषा के आलोक में प्रमा की दोनों परिभाषाओं की व्याख्या कीजिये और इसमें धारावाहिक ज्ञान की समस्या का किस प्रकार समाधान किया गया है की भी विवेचना कीजिये।

2. Explain Jnānagata pratyaksa.
ज्ञानगत प्रत्यक्ष की व्याख्या कीजिये।
3. Explain LAKṢAṆĀ and its kinds. Why Dharmarājādhvarīndra has not accepted the traditional interpretation of 'TATTVAMASI' through Jahadajahad Lakṣanā ? Discuss.
लक्षणा एवं इसके प्रकारों की व्याख्या कीजिये। क्यों धर्मराजाध्वरीन्द्र ने जहदजहद् लक्षणा द्वारा की गई तत्वमसि की व्याख्या को स्वीकार नहीं किया ? विवेचन कीजिये।
4. Discuss Anirvacanīyakhyātivāda. Why Dharmarājādhvarīndra has not accepted anirvacanīyakhyāti in some examples of illusion ? Explain.
अनिर्वचनीयख्यातिवाद का विवेचन कीजिये। क्यों धर्मराजाध्वरीन्द्र ने भ्रम के कुछ उदाहरणों में अनिर्वचनीयख्याति को स्वीकार नहीं किया है ? व्याख्या कीजिये।

Section - B

खण्ड - ब

Note: Answer any **three** questions each in **250** words. Each question carries **10** marks.
किन्हीं **तीन** प्रश्नों का चयन कर प्रत्येक का उत्तर **250** शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न **10** अंकों का है।

5. Explain the nature of indriyas (senses), their mode of action and the two fold division of perception through senses or without senses.
इन्द्रियों का स्वरूप, उनकी कार्यप्रणाली तथा इन्द्रियजन्य तथा इन्द्रिय-अजन्य प्रत्यक्ष के द्विविध प्रकारों की व्याख्या कीजिये।
6. Explain inference and its kinds according to Dharmarājādhvarīndra.
धर्मराजाध्वरीन्द्र के अनुसार अनुमान तथा इसके प्रकारों की व्याख्या कीजिये।
7. Discuss upamāna (comparison) as an independent source of knowledge. What is its utility in Advaita Vedānta ?
एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में उपमान की विवेचना कीजिये। अद्वैत वेदान्त में इसकी क्या उपयोगिता है ?
8. How Advaita Vedānta reconciles impersonal origin (apauruṣeyatva) of the vedas with their origin ? Discuss.
किस प्रकार अद्वैत वेदान्त में वेदों के अपौरुषेयत्व की संगति उनकी उत्पत्ति के साथ की गई है ? विवेचन कीजिये।
9. Explain the nature and kinds of Arthāpatti (Presumption).
अर्थापत्ति के स्वरूप एवं प्रकारों की व्याख्या कीजिये।
10. Explain Non-apprehension (Anupalabdhi) as an independent source of knowledge.
एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में अनुपलब्धि की व्याख्या कीजिये।